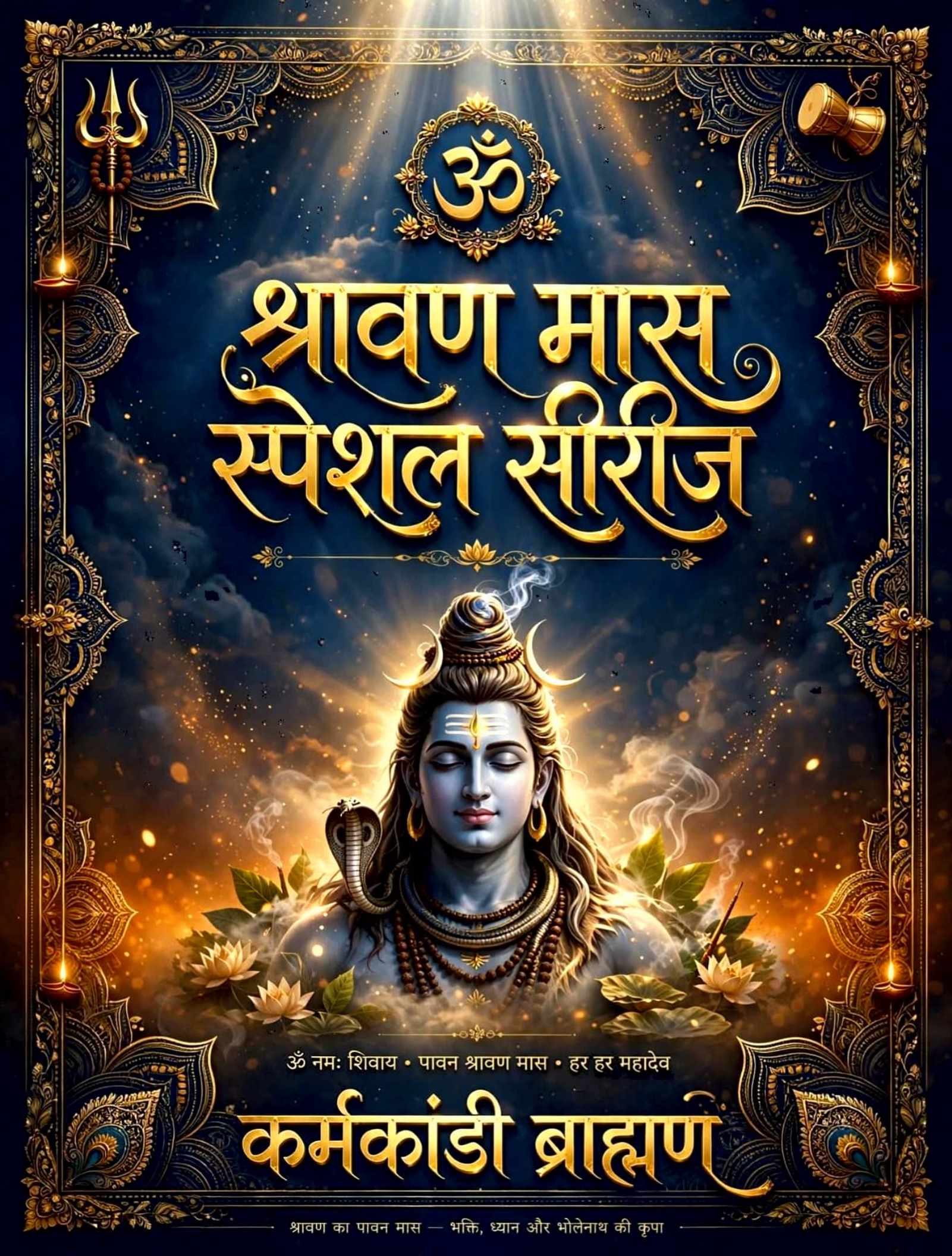
ॐ
श्रावण मास
स्पेशल सीरीज
ॐ नमः शिवाय • पावन श्रावण मास • हर हर महादेव
कर्मकांडी ब्राह्मण
श्रावण का पावन मास — भक्ति, ध्यान और भोलेनाथ की कृपा

पंचमो अध्यायः

हरिहि ॐ ॐभूहु ॐभुवह ॐस्वह
ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इखवे नमह।
वाहुभ्या मुत ते नमह।1।
जा ते रूद्र शिवा तनूर घोरा पाप काशिनी।
तया नस्तन्वा शन्त मया गिरि शन्ताभि चाक शीहि।2।
जामिखुन्गिरि शन्त हस्ते विभर्ख्यस्तवे।
शिवान्गिरित्र तान्कुरूमा हि गुँ सीही पुरूखन्जगत्।3।
शिवेन वचसा त्वा गिरि शाच्छा वदा मसि।
जथा नह सर्वमिज्जगद यक्ष्म गुँ सुमना असत्।4।

अध्यवोच दधि वक्ता प्रथमो दैव्यो भिखक्।
अहीन्श्च सर्वान्जम्भयन्त् सर्वाश्च जातुधान्यो
धराचीही परासुव।5।

असौ जस्ताम्रो अरूण उत बभ्रुहु सुमंगलह।

जे चैन गुँ रूद्रा अभितो दिक्षु श्रिताहा सहस्रशो वैखा गुँ हेडईमहे।6।

असौ जोव सर्पति नीलग्रीवो विलोहितह।

उतैनन्गोपा अदृश्रन्न दृश्रन्नु दहार्जह स दृष्टो मृडयाति नह।7।

नमोस्तु नीलग्रीवाय सहश्राक्षाय मीढुखे।

अथो जे अस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमह।8।

प्रमुन्च धन्वनस्त्व मुभयो रार्त्न्योर्ज्याम्।

जाश्च ते हस्त इखवह पराता भगवो वप।9।

विज्यन्धनुहु कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत।

अनेशन्नस्य जा इखव आभुरस्य निखंगधिहि।10।

जा ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुहु।

तयास्मान विश्वतस त्वम यक्ष्मया परिभुज।11।

परि ते धन्वनो हेति रस्मान्वृणक्तु विश्वतह।

अथो ज इखुधिस्त वारे अस्मन्नि धेहितम्।12।

अवतत्य धनुष्ट्व गुँ सहस्त्राक्ष शतेखुधे।

निशीर्ज शल्यानाम्मुखा शिवो नह सुमनाभव।13।

नमस्त आयु धाया नातताय धृष्णवे।

उभाभ्या मुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने।14।

मानो महान्तमुत मानो अर्भकम्मान उक्षन्तमुत मान उक्षितम्।

मानो वधीही पितरम्मोत मातरम्मानह प्रियास्तन्वो रूद्ररीरिखह।15।

मा नस्तोके तनये मा न आयुखि मानो गोखु मानो अश्वेखु रीरिखह।

मानो वीरान्न रूद्र भामिनो वधीरि हविखमन्तह सदमित्वा हवामहे।16।

नमो हिरण्य बाहवे सेनान्ये दिशांच पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो

हरिकेशेभ्यह पशूनाम्पतये नमो नमह शखिंजराय त्विखीमते

पथीनाम्पतये नमो नमो हरि केशायोप वीतिने पुष्टानाम्पतये नमो नमो बभ्लुशाय।17।

नमो बभ्लुशाय व्याधिनेन्ना नाम्पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै

जगताम्पतये नमो नमो रूद्राया तायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो नमह सूताया हन्त्यै वनानाम्पतये नमो नमो रोहिताय।18।

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये वारि वस्कृता यौखधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नम उच्चैर्घोखाया क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमो नमह कृत्स्नायतया।19।

नमह कृत्स्नायतया धावते सत्वनाम्पतये नमो नमह सह मानाय निव्याधिन आव्या धिनीनाम्पतये नमो नमो निखन्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचराया रण्यानाम्पतये नमो नमो वंचते।20।

नमो वंचते परिवंचते स्तायूनाम्पतये नमो नमो निखंगिण इखुधि

मते तस्कराणाम्पतये नमो नमह सृकायिभ्यो जिघा गुँ सद्भ्यो

मुष्णताम्पतये नमो नमो सिमद्भ्यो नक्तन्चर द्भ्यो

विकृन्तानाम्पतये नमह।21।

नम उष्णी खिणे गिरिचराय कुलुन्चानाम्पतये नमो नम

इखुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यह प्रतिदधानेभ्यश्च

वो नमो नम आयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्च वो नमो नमो विसृजद्भ्यह।22।

नमो विसृजद्भ्यो विध्यभ्यश्च वो नमो नमह स्व पदभ्यो

जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमह शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो

नमस्तिष्ठ द्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो नमह सभाभ्यह।23।

नमह सभाभ्यह सभापति भ्यश्च वो नमो नमोश्वेभ्यो श्व

पतिभ्यश्च वो नमो नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्ती ब्भ्यश्च वो

नमो नम उगणाभ्यस्तृ गुँ हतीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यह।24।

नमो गणेभ्यो गणपति भ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो
व्रातपति भ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्स पतिभ्यश्च वो
नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपे भ्यश्च वो नमो नमह सेनाभ्यह।25।
नमह सेनाभ्यह सेनानि भ्यश्च वो नमो नमो रथिब्भ्यो
अरथेभ्यश्च वो नमो नमह क्षत्तृब्भ्यह सन्ग्रहीतृभ्यश्च वो
नमो नमो महदभ्यो अर्भके भ्यश्च वो नमह।26।
नमस्तक्षभ्यो रथकारे भ्यश्च वो नमो नमह कुलालेभ्यह
कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निखादे भ्यह पुन्जिष्ठे भ्यश्च वो
नमो नमह श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो नमह श्वभ्यह।27।

नमह श्वभ्यह श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रूद्राय च नमह शर्वाय च पशुपतये च नमो नील ग्रीवाय च शिति कण्ठाय च नमह कपर्दिने।28।

नमह कपर्दिने च व्युप्त केशाय च नमह सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेखुमते च नमो ह्रस्वाय।29।

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्खीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोग्रयाय च प्रथमाय च नम आशवे।30।

नम आशवे चा जिराय च नमह शीग्घ्याय च शीभ्याय च नम

ऊर्म्याय चा वस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।31।

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमह पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च नमह सोभ्याय।32।

नमह सोभ्याय च प्रतिसर्जाय च नमो जाम्याय चक्षेम्याय च नमह श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वज्र्जाय च खल्याय च नमो वन्याय।33।

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमह श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुखेणाय चाशुरथाय च नमह शूराय चाव भेदिने च नमो बिल्मिने।34।

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमह श्रुताय च श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे।35।

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निखन्गिणे चेखुधिमते च

नमस्तीक्ष्णे खवे चायुधिने च नमह स्वायुधाय च सुधन्वने च।36।

नमह श्रुत्याय च पथ्याय च नमह काट्टयाय च नीप्याय च नमह कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च नमह कूप्याय।37।

नमह कूप्याय्य चावट्टयाय च नमो वीद्घ्रयाय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ख्याय चावर्ख्याय च नमो वात्याय।38। नमो वात्याय च रेख्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमह सोमाय च रूद्राय च नमस्ताम्राय चारूणाय च नमह शंगवे।39।

नमह शंगवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो ग्रे वधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय।40। नमह शम्भवाय च मयो भवाय च नमह शंकराय च मयस्करायच नमह शिवाय च शिवतराय च।41।

नमह पार्जाय चावार्जाय च नमह प्रत्तरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमह शष्प्याय च फेन्याय च नमह सिकत्याय।42।

नमह सिकत्याय च प्रवाह्ज्जाय च नमह कि गुँ शिलाय च क्षयणाय च नमह कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च नमो व्रज्याय।43।

नमो व्रज्याय च गोष्ठयाय च नमस्तल्प्याय च गेह्ज्जाय च नमो ह्रदज्जाय च निवेख्प्याय च नमह काट्टयाय च गह्वरेष्ठाय च नमह शुख्क्याय।44।

नमह शुख्क्याय च हरित्याय च नमह पा गुँ सव्याय च रजस्याय च
नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च नमह पर्णाय।45।
नमह पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुर माणाय चाभिघ्नते च नम
आखिदते च प्रखिदते च नम इखुकृदभ्यो धनुख्कृदभ्यश्चवो
नमो नमो वह किरिकेब्भ्यो देवाना गुँ हृदयेभ्यो
नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यह।46।
द्रापे अन्ध सस्पते दरिद्रनील लोहित।
आसां प्रजानामेखां पशूनाम्मा भेर्म्मा रोंमो च नह
किंचनाममत्।47।

इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीही।
जथा शमसद द्विपदे चतुख्पदे विश्वम्पुष्टन्ग्रामे अस्मिन ननातुरम।48।
जाते रूद्र शिवा तनूहू शिवा विश्वाहा भेखजी।
शिवा रूतस्य भेखजी तया नो मृडजीवसे।49।
परि नो रूद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वे खस्य दुर्मतिर घायोहो।
अवस्थिरा मघवद्भ्यस तनुख्व मीढवस्तोकाय तनयाय मृड।50।
मीढुष्टम शिवतम शिवो नह सुमना भव।
परमे वृक्ष आयुधन निधाय कृत्तिम्वसान आचर पिनाकम् बिभ्रदा गहि।51।

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवह।

जास्ते सहस्त्र गुँ हेतयोन्य मस्मन निवपन्तु ताहा।52।

सहस्त्राणि सहस्त्रशो बाहवोस्तव हेतयह।

तासा मीशानो भगवह पराचीना मुखा कृधि।53।

असन्ख्याता सहस्त्राणि जे रूद्रा अधि भूम्याम्।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।54।

अस्मिन् महत्यर्णवे अन्तरिक्षे भवा अधि।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।55।

नील ग्रीवाहा शितिकण्ठा दिव गुँ रूद्रा उपश्रिताहा।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।56।

नीलग्रीवाहा शिति कण्ठाहा शर्वा अधह क्षमा चराहा।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।57।

जे वृक्षेखु शखिन्जरा नीलग्रीवा विलोहिताहा।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।58।

जे भूताना मधिपतयो विशिखासह कपर्दिनह।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।59।

जे पथाम पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्जुधह।

तेखा गुँ सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।60।

जे तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निखन्गिणह।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।61।

जेन्नेखु विविध्यन्ति पात्रेखु पिवतो जनान्।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।62।

ज एता वन्तश्च भूया गुँ सश्च दिशो रूद्रा वित स्थिरे।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।63।

तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु तेनो मृडयन्तु ते जन्द्विखमो जश्च नो द्वेष्टि

तमेखान् जम्भे दध्मह।64।

नमोस्तु रूद्रेभ्यो जे अन्तरिक्षे जेखाम् वात इखवह।

तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशो दीचीर्दशोर्ध्वाहा।

तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु तेनो मृडयन्तु ते जन्द्विखमो जश्च नो

द्वेष्टि तमेखान् जम्भेदध्मह।65।

नमोस्तु रूद्रेभ्यो जे दिवि जेखाम् वर्ख मिखवह।

तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशो दीचीर्दशोर्ध्वाहा।

नमोस्तु रूद्रेभ्यो जे पृथिव्याम् जेखाम् अन्न मिखवह।

तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशो दीचीर्दशोर्ध्वाहा।

तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु तेनो मृडयन्तु ते जन्द्विखमो जश्च नो द्वेष्टि

तमेखान् जम्भेदध्मह।66। ।

ॐस्वह ॐभुवह ॐभूहु।

। इति रूद्रपाठे पंचमोध्याय।

शान्ति अध्याय

हरिहि ॐ ऋचम् वाचम् प्रपद्ये मनो जजुहु प्रपद्ये साम प्राणम् प्रपद्ये चक्षुहु श्रोत्रम् प्रपद्ये । वागोजह सहौजो मयि प्राणापानौ।1।

जन्मे छिद्रन्चक्षुखो हृदयस्य मनसो वातितृष्णम् बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य जस्पतिहि।2।

भूर्भुवह स्वह तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नह प्रचोदयात्।3।

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधह सखा। कया शचिष्ठया वृता।4।

कस्त्वा सत्योमदानाम्म गुँ हिष्ठो मत्सदन्धसह। दृढा चिदारूजे वसु।5।

अभीखुणह सखी नामविता जरितृणाम्। शतम्भवास्यूतिभिहि।6।

कया त्वन्न ऊत्याभि प्रमन्दसे वृखन्। कया स्तोतृभ्य आभर।7।
इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नो अस्तु द्विपदे शन्चतुख्पदे।8।
शन्नो मित्रह शम्वरूणह शन्नो भवत्वर्जमा।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिहि शन्नो विष्णुरूरूक्रमह।9।
शन्नो वातह पवता गुँ शन्नस्तपतु सूर्जह।
शन्नह कनिक्रद्देवह पर्जन्यो अभिवर्खतु।10।
अहानिशम्भवन्तु नह श गुँ रात्रीही प्रतिधीयताम्।
शन्न इन्द्राग्नी भवताम् वोभिहि शन्न इन्द्रावरूणा रातहव्या।
शन्न इन्द्रा पूखणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शन्जोहो।11।
शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शन्जो रभि स्रवन्तुनह।12।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। जच्छा नह शर्मसप्रथाहा।13।

आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।14।

जो वह शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनह उशतीरिव मातरह।15।

तस्मा अरन्गमाम वो जस्यक्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नह।16।

द्यौहौ शान्तिरन्तरिक्ष गुँ शान्तिहि पृथिवी शान्तिरापह

शान्तिरौखधयह शान्तिहि। वनस्पतयह शान्तिर्विश्वे देवाहा

ऋान्तिर्ब्रह्म शान्तिहि सर्व गुँ शान्तिहि शान्तिरेव शान्तिहि सामा

शान्तिरेधि।17।

दृते दृ गुँ ह मा मित्रस्य मा चक्षुखा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् मित्रस्याहं चक्षुखा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुखा समीक्षामहे।18।

दृते दृ गुँ हमा ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासन्ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम्।19।

नमस्ते हरसे शोचिखे नमस्ते अस्त्वर्चिखे। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयह पावको अस्मभ्य गुँ शिवो भव।20।

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते भगवन्नस्तु जतह स्वह समीहसे।21।
जतो यतह समीहसे ततो नो भयन्कुरू।
शन्नह कुरू प्रजाभ्यो भयन्न पशुभ्यह।22।

सुमित्रिया न आप ओखधयह सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै।

सन्तु जोअस्मान् द्वेष्टि जन्च वयन्द्विखमह।23।

तच्चक्षुर्देवहितम् पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत्। पश्येम शरदह शतन्जीवेम

शरदह शत गुँ श्रृणुयामशरदह शतम्प्रब्रवाम शरदह शतमदीनाहा

स्याम शरदह शतम्भूयश्च शरदह शतात्।24।

॥इति रूद्रपाठे शान्त्यध्यायः॥

स्वस्ति मंत्र

हरिहि ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाहा स्वस्ति नह पूखा विश्ववेदाहा

स्वस्तिनस्तार्क्ष्योो अरिष्टनेमिहि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।1।

ॐ पयह पृथिव्याम् पय ओखधीखु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाहा।

पयस्वतीही प्रदिशह सन्तु महय्यम्।2।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोहो श्नपत्रे स्थो विष्णोहो।

स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोअसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्त्वा।3।

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्जो देवता चन्द्रमा देवता वसवो
देवता रूद्रा देवता आदित्या देवता मरूतो देवता
विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरूणो देवता।4।
ॐ सद्योजातम् प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमह।
भवे भवे नातिभवे भवस्व माम् भवोदभवाय नमह।5।
वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमह श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमह
कालाय नमह कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमो बलाय
नमो बलप्रमथनाय नमह सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमह।6।
ॐ अघोरेभ्योअथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यह।
सर्वेभ्यह सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रूद्र रूपेभ्यह।7।

तत्पपुरूखाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रूद्रह प्रचोदयात्।8।
ईशानह सर्वविद्या नामीश्वरह सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो
अधिपतिर्ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदा शिवोम्।9।
ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि गुँ सीही।
निवर्त्तयाम्या युखेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोखाय सुप्रजास्त्वाय
सुवीर्जाय।10।
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यदभद्रन्तन्न आसुव।11।
ॐ द्यौहौ शान्तिरन्तरिक्ष गुँ शान्तिहि पृथिवी शान्तिरापह शान्तिरौखधयह
शान्तिहि। वनस्पतयह शान्तिर्विश्वेदेवाहा।
शान्तिर्बह्म शान्तिहि सर्व गुँ शान्तिहि शान्तिरेव शान्तिहि सामा
शान्तिरेधि।12।

ॐ सर्वेखाम् वा एख वेदाना गुँ रसो यत्साम सर्वेखाम
एवैन मेतद वेदाना गुँ रसेनाभिषिन्चति।13।
ॐ शान्तिहि शान्तिहि शान्तिहि सुशान्तिर्भवतु सर्वारिष्ट
शान्तिर्भवतु। यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनन्च् यद्भवेत्।
तत्सर्वम क्षम्यताम देव प्रसीद परमेश्वर।।
अनेन कृतेन श्रीरूद्राभिषेक कर्मणा
श्रीभवानी शंकर महामृत्युंजय प्रीयताम न मम।
।। ॐ श्री साम्ब सदा शिवार्पण मस्तु ।।

रूद्राष्टाध्यायी सम्पूर्णम्

ॐ

श्रावण मास स्पेशल सीरीज

ॐ नमः शिवाय • पावन श्रावण मास • हर हर महादेव

कर्मकांडी ब्राह्मण

श्रावण का पावन मास — भक्ति, ध्यान और भोलेनाथ की कृपा